

आज हेल्थ ठीक है, वेल्थ है, हैपी हैं, होली है? नहीं है तो क्यों? उस रोग को जान कर फौरन ही उसकी दवाई करो और तो सभी प्रकार की दवाई मिल चुकी है। सभी प्राप्ति हैं। तो सभी प्राप्ति होते भी समय पर क्यों नहीं कर पाते हो? समय के बाद स्मृति में क्यों आते हो? यह कमजोरी है जो समय पर काम नहीं करते। समय के बाद करते हो तो समय तो बीत जाता है ना। समय पर सब स्मृति रहे, उसके लिए अपनी बुद्धि इतनी विशाल वा नॉलेजफुल नहीं बनी है। तो फिर कोई सहारा चाहता है, वह सहारा सदा साथ रखो तो कभी हार नहीं होगी। तो कभी भी अपने को रोगी नहीं बनाना। जरा भी किसी प्रकार का रोग प्रवेश हो गया तो एक व्याधि फिर अनेक व्याधियों को लाती है। एक को ही खत्म कर दिया तो अनेक आयेंगी ही नहीं। एक में अलबेले रहते हो, हल्की बात समझते हो। लेकिन वर्तमान समय के प्रमाण हल्की व्याधि भी बड़ी व्याधि है इसलिए हल्के को ही बड़ा समझ वहाँ ही खत्म कर दो तो आत्मा कभी निर्बल नहीं होगी, हेल्दी रहेगी।

साकार में भी सदा साथ रहने के अनुभवी हो। अकेले रहना पसन्द नहीं करते हो। जब संस्कार ही साथ रहने के हैं तो ऐसे साथ रखने में कमी क्यों करते हो, निवृत्ति मार्ग वाले क्यों बनते हो? जैसे वह निवृत्ति मार्ग वाले प्राप्ति कुछ भी नहीं करते, दूँढते ही रहते हैं। ऐसी हालत हो जाती है। वास्तविक प्राप्ति को प्राप्त नहीं कर पाते हो। तो सदा साथ रखो, सम्बन्ध में रहो। परिवार की पालना में रहो तो जो पालना के अन्दर सदैव रहते हैं वह सदा निश्चित और हर्षित रहते हैं। पालना के बाहर क्यों निकलते हो? निवृत्ति में कभी नहीं जाओ तो साथ का अनुभव करने से स्वतः ही सर्व प्राप्ति हो जायेगी। जिस समय आप लोग बाप-दादा वा परिवार का साथ छोड़ देते हो, तो कांटों के जंगल में चले जाते हो। जैसे वह जंगलों में दूँढते रहते हैं, वैसे ही माया के जंगलों में स्वयं ही साथ छोड़ फिर परेशान हो दूँढते हो कि कहीं सहारा मिल जाए। आप कहते हो कि निवृत्ति मार्ग वाले अकेले होने के कारण कभी कर्म की सफलता नहीं पा सकते हैं। तो जैसे उन्हें कोई भी कर्म की सफलता नहीं मिलती इसी प्रकार अगर आप भी साथ छोड़ अकेले निवृत्ति मार्ग वाले बन जाते हो तो कर्म की सफलता नहीं होती है। अकेले में उदास होते हो तो माया के दास बन जाते हो इसलिए न अकेले बनो, न उदास बनो, न माया के दास बनो। अच्छा!

**वरदान:- स्थूल कार्य करते भी मन्सा द्वारा विश्व परिवर्तन की सेवा करने वाली जिम्मेवार आत्मा भव**

कोई भी स्थूल कार्य करते सदा यह स्मृति रहे कि मैं विश्व की स्टेज पर विश्व कल्याण की सेवा अर्थ निमित्त हूँ। मुझे अपनी श्रेष्ठ मन्सा द्वारा विश्व परिवर्तन के कार्य की बहुत बड़ी जिम्मेवारी मिली हुई है। इस स्मृति से अलबेलापन समाप्त हो जायेगा और समय भी व्यर्थ जाने से बच जायेगा। एक-एक सेकण्ड अमूल्य समझते हुए विश्व कल्याण के वा जड़-चैतन्य को परिवर्तन करने के कार्य में सफल करते रहेंगे।

**स्लोगान:-**

अभी योद्धा बनने के बजाए निरन्तर योगी बनो।

9-1-11 प्रातःमुरली ओम् शक्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज:12-6-72 मधुबन

## रिफाइन स्थिति की पहचान

जैसे साइन्स रिफाइन होती जाती है ऐसे अपने आप में साइलेन्स की शक्ति वा अपनी स्थिति रिफाइन होती जा रही है? जब रिफाइन चीज होती है उसमें क्या-क्या विशेषता होती है? रिफाइन चीज जो होती है उनकी क्वान्टिटी भले कम होती है, लेकिन क्वालिटी पावरफुल होती है। जो चीज रिफाइन नहीं होगी उसकी क्वान्टिटी ज्यादा, क्वालिटी कम होगी। तो यहाँ भी जबकि रिफाइन होते जाते हैं तो कम समय, कम संकल्प, कम इनर्जी में जो कर्तव्य होगा वह सौगुणा होगा और हल्कापन भी हो जाता। हल्केपन की निशानी होगी - वह कब नीचे नहीं आयेगा, ना चाहते भी स्वतः ही ऊपर स्थित रहेगा। यह है रिफाइन क्वालिफिकेशन। तो अपने में यह दोनों विशेषताएं अनुभव होती जाती हैं? भारी होने कारण मेहनत ज्यादा करनी होती है। हल्का होने से मेहनत कम हो जाती है। तो ऐसे नैचुरल परिवर्तन होता जाता है। यह दोनों विशेषताएं सदा अटेन्शन में रहें। इसको सामने रखते हुए अपनी रिफाइननेस को चेक कर सकते हो। रिफाइन चीज जास्ती भटकती नहीं। स्पीड पकड़ लेती है। अगर रिफाइन नहीं होगी, किचड़ा मिक्स होगा तो स्पीड पकड़ नहीं सकेगी। निर्विघ्न चल नहीं सकेगी। एक तरफ जितना-जितना रिफाइन हो रहे हो, दूसरे तरफ उतना ही छोटी-छोटी बातें वा भूलें वा संस्कार जो हैं उनका फाइन भी बढ़ता जा रहा है। एक तरफ वह नज़ारा, दूसरे तरफ रिफाइन होने का नज़ारा, दोनों का फोर्स है। अगर रिफाइन नहीं तो फाइन समझो। दोनों साथ-साथ नज़ारे दिखाई दे रहे हैं। वह भी अति में जा रहा है और यह भी अति प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देता जा रहा है। गुप्त अब प्रख्यात हो रहा है। तो जब दोनों बातें प्रत्यक्ष हों, उसी अनुसार ही तो नम्बर बनेंगे।

माला हाथ से नहीं पिरोनी है। चलन से ही स्वयं अपना नम्बर ले लेते हैं। अभी नम्बर फिक्स होने का समय आ रहा है इसलिए दोनों बातें स्पष्ट दिखाई दे रही हैं और दोनों को देखते हुए साक्षी हो हर्षित रहना है। खेल भी वही अच्छा लगता है जिसमें कोई बात की अति होती है। वही सीन अति आकर्षण वाली होती है। अभी भी ऐसी कस्मकसा की सीन चल रही है। देखने में मज़ा आता है ना? वा तरस आता है? एक तरफ को देख खुश होते, दूसरे तरफ को देख रहम पड़ता। दोनों का खेल चल रहा है। आज खेल दिखाया कि पर्दे पर क्या चल रहा है। वतन से तो बहुत स्पष्ट दिखाई देता है। जितना जो ऊंच होता है उनको स्पष्ट दिखाई देता है। जो नीचे स्टेज पर पार्टधारी हैं उनको कुछ भी दिखाई नहीं दे सकता। साक्षी हो ऊपर से सभी स्पष्ट दिखाई देता है। आज वतन में वर्तमान खेल की सीन देख रहे थे। अच्छा!

दूसरी मुरली - 14-6-72

## स्व-स्थिति में स्थित होने का पुरुषार्थ वा निशानियां

अपने आदि और अनादि स्व-स्थिति को जानते हो? सदा अपनी स्व-स्थिति में स्थित रहने का अटेन्शन रहता है? जो स्व-स्थिति अर्थात् अपनी अनादि स्थिति है उस स्व-स्थिति में स्थित होना

मुश्किल लगता है? और स्थिति में स्थित होना मुश्किल हो भी सकता है लेकिन स्व-स्थिति में स्थित होना तो स्वतः ही और सरल है ना। स्व-स्थिति में सदा स्थित रहें, इसके लिए मुख्य चार बातें आवश्यक हैं। अगर वह चारों ही बातें सदैव कायम हैं तो स्व-स्थिति सदा रहती है। अगर चारों में से कोई की भी कमी है तो स्व-स्थिति में भी कम स्थित हो सकता है। स्व-स्थिति का जो वर्णन करते हो उसको सामने रखते हुए फिर सोचो कि कौन-सी चार बातें सदा साथ होनी चाहिए? स्व-स्थिति के लक्षण क्या होते हैं? जो भी बाप के गुण हैं उन गुणों का स्वरूप होना इसको कहते हैं स्व-स्थिति वा अनादि स्थिति। तो ऐसी स्थिति सदा रहे इसके लिए 4 बातें कौनसी आवश्यक हैं? स्मृति में आता है? जिन चार बातों के होने से अनादि स्थिति आटोमेटिकली रहती है। सुख-शान्ति-आनन्द-प्रेम की स्थिति स्वतः ही रहती है। पहले यह सोचो कि अनादि स्थिति से मध्य की स्थिति में आते ही क्यों हो? इसका कारण क्या है? (देह अभिमान) देह अभिमान में आने से क्या होता है? देह अभिमान में आने के कारण क्या होते हैं? पर-स्थिति सहज और स्व-स्थिति मुश्किल क्यों लगती है? देह भी तो स्व से अलग है ना। तो देह में सहज स्थित हो जाते हो और स्व में स्थित नहीं होते हो, कारण? वैसे भी देखो तो सदा सुख वा शान्तिमय जीवन तब बन सकती है जब जीवन में चार बातें हों। वह चार बातें हैं हेल्थ, वेल्थ, हैपी और होली। अगर यह चार बातें सदा कायम रहें तो दुःख और अशान्ति कभी भी जीवन में अनुभव न करें। ऐसे स्व-स्थिति का स्वरूप भी है सदा सुख-शान्ति-आनन्द-प्रेम स्वरूप में स्थित रहना। तो स्व-स्थिति से भी विस्मृति में आते हो इसका कारण क्या होता है? वेल्थ की कमी वा हेल्थ की कमजोरी वा होली नहीं बनते हो। इसके साथ-साथ हैपी अर्थात् हर्षित नहीं रह सकते हो। तो हेल्थ, वेल्थ कौनसी? आत्मा सदा निरोगी रहे, माया की कोई भी व्याधि आत्मा पर असर ना करे इसको कहा जाता है हेल्दी। और फिर वेल्दी भी हो अर्थात् जो खजाना मिलता रहता है वा जो सर्वशक्तियां बाप द्वारा वरसें में प्राप्त हुई हैं, उस प्राप्त हुए ज्ञान खजाने को वा सर्वशक्तियों के खजाने को सदा कायम रखो तो बताओ स्व-स्थिति से नीचे आ सकते हो? इतना ही फिर होली। संकल्प, स्वप्न में भी कोई अपवित्रता ना हो तो स्व-स्थिति स्वतः ही हो जाएगी। इन चार बातों की कमी होने कारण स्व-स्थिति में सदा नहीं रह सकते हो। यह चार बातें चेक करो। हेल्दी, वेल्दी कहाँ तक बने हैं? हेल्दी, वेल्दी और होली यह तीनों ही बातें हैं तो हैपी आटोमेटिकली होगा। तो इन चार बातों को सदा ध्यान में रखो। वैसे भी रोगी अपने को कभी भी सुखी नहीं समझते। रोगी होने कारण दुःख की लहर ना चाहते हुए भी उठती रहती। तो यहाँ भी सदा हेल्दी नहीं हैं, तब दुःख वा अशान्ति की लहर उत्पन्न होती है। तो यह चारों ही बातें सदा कायम रहें इसका कौन-सा पुरुषार्थ है, जो यह कभी भी गायब न हो? इसके लिए सहज पुरुषार्थ सुनाओ जो सभी कर सकें। जरा भी मुश्किल बात होती है तो कर नहीं पाते हो। सहज चाहते हो ना क्योंकि आत्मा में आदि देवता धर्म के संस्कार होने कारण आधाकल्प बहुत सहज सुखों में रहते हो, कोई मेहनत नहीं करते हो, तो वह आधे कल्प के संस्कार आत्मा में होने कारण अभी कोई मुश्किल बात होती है तो वह कर नहीं पाते हो। सदा सहज की इच्छा रहती है। तो वह सहज पुरुषार्थ कौनसा है? याद भी सहज कैसे हो?

याद सहज और सदा रहे और हेल्दी, वेल्दी, हैपी, होली भी कायम रहें, इसका पुरुषार्थ सुनाओ।

चारों ही बातें साथ-साथ रहें। जैसे आप भी निराकार और साकार दोनों रूप में हो ना। निराकार आत्मा और साकार शरीर दोनों के सम्बन्ध से हर कार्य कर सकते हो। अगर दोनों का सम्बन्ध ना हो तो कोई भी कार्य नहीं कर सकते। ऐसे ही निराकार और साकार बाप दोनों का साथ वा सामने रखते हुए हर कर्म वा हर संकल्प करो तो यह चारों बातें आटोमेटिकली आ जायेगी। सिर्फ निराकार को वा सिर्फ साकार को याद करने से चारों बातें नहीं आयेगी। लेकिन निराकार और साकार दोनों ही सदा साथ रहें, तो साथ होने से जो संकल्प करेंगे वह पहले जरूर उनसे वेरीफाय करायेंगे, वेरीफाय कराने के बाद कोई भी कर्म करने से निश्चय बुद्धि होकर करेंगे। जैसे देखो साकार में अगर कोई निमित्त श्रेष्ठ आत्मा साथ में है तो उनसे कोई भी बात वेरीफाय कराए फिर करेंगे तो निश्चय बुद्धि होकर करेंगे ना। निर्भयता और निश्चय दोनों गुणों को सामने रख करेंगे। तो जहाँ सदा निश्चय और निर्भयता है वहाँ सदैव श्रेष्ठ संकल्प की विजय है। जो भी संकल्प करते हो, अगर सदा निराकार और साकार साथ वा सम्मुख है, तो वेरीफाय कराने के बाद निश्चय और निर्भयता से वह करेंगे। समय भी वेस्ट नहीं करेंगे। यह काम करें वा ना करें, सफल होगा वा नहीं होगा? यह व्यर्थ संकल्प सभी खत्म हो जायेगे। वर्तमान समय आत्मा में जो कमजोरी की व्याधि है, वह कौन-सी है? व्यर्थ संकल्पों में व्यर्थ समय गंवाने की, यही वर्तमान समय आत्मा की कमजोरी है। इस बीमारी के कारण सदा हेल्दी नहीं रहते। कभी रहते हैं, कभी कमजोर बन जाते हैं। तो साकार और निराकार को सम्मुख रख वेरीफाय कराकर हर कार्य करो, यही सदा हेल्दी रहने का साधन है। इससे समय भी बच जायेगा। आप प्रैक्टिकल में ऐसे अनुभव करेंगे जैसे साकार रूप में कोई वेरीफाय कराते हैं। है कॉमन बात लेकिन इसी कॉमन बात को प्रैक्टिकल में कम लाते हो। सुना बहुत समय है लेकिन अनुभवी नहीं बने हो। बापदादा सदा साथ है – यह अनुभव करो तो हेल्दी-वेल्दी नहीं रहेंगे? बापदादा निराकार और साकार दोनों के साथ होने से हेल्थ और वेल्थ दोनों आ जाती हैं और हैपी तो आटोमेटिकली होगा। तो सहज पुरुषार्थ कौन-सा हुआ?

निराकार और साकार दोनों को सदा साथ में रखो। सदा साथ न रखने कारण यह रिजल्ट है। क्या साथ रखना मुश्किल लगता है? जब जान लिया और पहचान लिया, मान लिया कि सभी सम्बन्ध एक के साथ हैं, दूसरा ना कोई, तो उसमें चलने में क्या मुश्किल है? साथ क्यों छोड़ते हो? सीता का साथ क्यों छूटा? कारण? लकीर को उल्लंघन किया। यह चन्द्रवंशी सीता का काम है, लक्ष्मी का नहीं। तो मर्यादा की लकीर के बाहर बुद्धि जरा भी ना जाए, नहीं तो चन्द्रवंशी बनेगे। बुद्धि रूपी पांव मर्यादा की लकीर से संकल्प वा स्वप्न में भी बाहर निकलता है तो अपने को चन्द्रवंशी सीता समझना चाहिए, सूर्यवंशी लक्ष्मी नहीं। सूर्यवंशी अर्थात् शूरवीर। जो शूरवीर होता है वह कभी कोई के वश नहीं होता है। तो सदा साथ रखने के लिए अपने को मर्यादा की लकीर के अन्दर रखो, लकीर के बाहर ना निकलो। बाहर निकलते हो तो फकीर बन जाते हो। फिर मांगते रहते हो, यह मदद मिले, यह सैलवेशन मिले। मंगता हुआ ना। फकीर बनने का अर्थ ही है – हेल्थ, वेल्थ गंवा देते हो इसलिए फकीर बन जाते हो। तो ना लकीर को पार करो, ना फकीर बनो। लकीर के अन्दर रहने से मायाजीत बन सकते हो। लकीर को पार करने से माया से हार खा लेते हो इसलिए सदा हेल्दी, वेल्दी, हैपी और होली बनो। चेक करो कि इन चारों में से आज किस बात की कमी रही,